प्रात: क्लास पिता श्री ओमशान्ति 6-11-67.

रिकॉर्ड :- भोले नाथ से निराला ....ओमशान्ति। बच्चों ने गीत सुना और भोला नाथ का नाम सुना। नाम कितना बड़ा है। समझ में आता है कोई बहुत बड़ी चीज़ है। परन्तु है बहुत बहुत छोटी चीज़। ऐसी छोटी वस्तु दुनिया में कोई नहीं होगी। छोटी चीज़ें तो बहुत होती हैं। हीरे मोती छोटे होते हैं, एक रत्ती में 100 होते हैं। जैसे सुई का धागा कितना छोटा होता है। सिलाई करने में भी धागा पहनते हैं, उस पर सुई को उठाते हैं। तो नाम कितना है भोलानाथ शिव बाबा है। कितनी छोटी, अति छोटी चीज़ है। जो इन आँखों से भी देखने में नहीं आए सकते। सुई तो फिर भी आँखों से देखने में आती है। आत्मा इतनी छोटी है जो इन आँखों से नहीं देखी जा सकती। उसका नाम है भोलानाथ शिव। फिर उनको मनुष्यों ने शिव-शंकर मिला दिया है। अब कहाँ वह इतनी छोटी बिन्दी कहाँ शंकर इतना बड़ा। दोनों को मिला देते। बाप बैठ समझाते हैं इतनी छोटी बिन्दी, इन पर फिर माया का आवरण चढ़ जाता है। कितनी छोटी आत्मा है। सुई के नोक से भी छोटी। जो सिर्फ दिव्य चक्षु से उनको देखा जाता है। उनमें माया का कितना आवरण है। कितनी समझने की बातें हैं। फिर उस आवरण को मिटाना पड़ता है। कट उतर तब आत्मा प्युअर हो जावे। बाप कैसे और क्या अक्षर समझाते हैं यह किसको बुद्धि में नहीं है। आत्मा कितनी छोटी चीज़ है। उन पर कैसे कट चढ़ती है। फिर योग बल से सतोप्रधान बनते हैं। देखने में भी नहीं आती है। कितनी छोटी आत्मा है। गाते भी हैं भृकुटि के बीच चमकता है सितारा। इन बातों पर कोई बिचार नहीं कर सकते हैं। मनुष्य मुख से कहते हैं भृकुटि के बीच चमकता है सितारा। परन्तु वह कैसा होगा कुछ भी नहीं जानते। आत्मा और परमात्मा का पता हो तो उस पर सोच चले ना। जरा बिचार करो। कितना महीन सोच चलाना होगा।

आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। जो इन आँखों से भी नहीं देखी जाती। इनको दिव्य दृष्टि से देखा जाता है। आत्मा भी देखी जाती, परमात्मा भी देखा जाता है दिव्य दृष्टि से। है दोनों एक। इतनी छोटी आत्मा पर कैसे माया का आवरण होता है। जिसको मोटे रूप में कट कहते हैं। यह भी समझने की बातें हैं। कट योग बल से उतरनी भी ज़रूर है। बाप के साथ बुद्धि का योग लगाना है। अभी तुम बच्चों को समझ बहुत मिलती है जो कल्प पहले मिलती रहती है। मामेकं याद करो। कौन कहते हैं? फिर उनके ऊपर आओ। कितनी छोटी चीज़ फिर इन शरीर द्वारा आए बात करती है। इन सब महीन बातों पर बिचार सागर मंथन करना होता है। ऐसे बहुत कोई मुश्किल बच्चे हैं जो ऐसी 2 महीन बातों पर बिचार करें और समझें कि आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है। क्योंकि यह है बेहद की समझ की बातें। कई तो इन बातों को समझ भी न सकें। मूँझ कर अपने ही धंधे आदि में लग जावेंगे। मोटी बुद्धि वालों को कट उतर न सके। इसमें बड़ी महीन बुद्धि चाहिए। मोटी बुद्धि और महीन बुद्धि किसको कहा जाता है, यह भी बाप बैठ समझाते हैं। इतनी महीन बातें हैं जो किसकी बुद्धि में बैठना बड़ा मुश्किल है। अच्छी रीति कोई बिचार सागर मंथन करता बुद्धि में आये। ऐसी आत्मा को अपने बाप की याद में रहना है। आत्मा कितनी छोटी है। यह शरीर तो कितना बड़ा है। इतने बड़े शरीर में कितनी छोटी आत्मा है, वन्डर है ना। इसके लिए ही बाप कहते हैं मैं तुमको बहुत गुह्य ते गुह्य बातें सुनाता हूँ। बहुत गुह्य है। यह गुह्यतम बातें हैं। तुमको अभी बाप द्वारा मालूम पड़ता है। आत्मा का रूप भी अभी तुम वर्णन करते हो। कितनी छोटी चीज़ है। उनको कैसे प्युअर करते हैं। इसमें बहुत 2 महीनता में आना पड़ता है। बात एक सेकण्ड की पर कितनी सूक्ष्म है। तुम बिचार करेंगे आत्मा कितनी छोटी है। याद करने से ही यह तो एकदम उड़ जाना चाहिए। सेकण्ड में जीवनमुक्ति कहा जाता है ना। तो आवरण को हटाने लिए एक सेकण्ड लगना चाहिए। आवरण कैसे हटे इसका ख्याल किया जाता है। कितना महीनता में जाना पड़ता है। जहाँ बाबा की भी गम नहीं। बाबा कहाँ से निकालेंगे। इतनी छोटी चीज़, इतनी महीन। इनसे बाबा कैसे निकलेंगे। आत्मा जो है जैसे है उनको पूरी रीति समझना है। कोई भी साधु-सन्त आदि किसको भी आत्मा का ज्ञान नहीं है। कहते तो सब हैं कि माया का आवरण चढ़ा है परन्तु समझते कुछ भी नहीं। यह तुम बच्चों को ही बाप बैठ समझाते हैं। यह तो बड़ी मेहनत का काम है। आत्मा को फिर से यह बनना है इसके लिए आत्मा सिर्फ प्युअर होती है। कितनी छोटी है, इनको प्युअर बनाना है। इन बातों का वर्णन बहुत

महीन बुद्धि वाला ही कर सकते हैं। कितनी छोटी आत्मा है। उनको प्योर करना है। सेकण्ड में टिक २ होती है ना। इसी में प्योर होना है। यह बड़ी समझ की बात है। हम जितना याद करेंगे उस छोटी सी चीज़ को उतना हम प्योर होते जायेंगे। इतनी छोटी है जो याद करने में सेकण्ड भी नहीं लगना चाहिए। ज़रा सी चीज़ है। बाप को याद किया और प्योर बने। फट ऊपर जानी है। इस में क्या देरी लगेगी। ऐसी २ महीन बातों को जब सोच किया जाता है तो उसमें ही जैसे लीन हो जाते हैं। बहुत डीप जाने से शरीर ही जैसे भूल जाता है। बस ऐसी ही जैसे लग जाते हैं। बाप बैठ यह सब समझाते हैं। कितनी गुह्य ते गुह्य बातें हैं। इसमें टाईम नहीं लगना चाहिए इतनी छोटी सी चीज़ प्योर बनाने में यह तो मिनट की बात है। बाप स्वयं बैठ बताते हैं। बच्चों को इतना जास्ती टाईम क्यों लगता है। क्योंकि घड़ी २ भूल जाते हैं। बाप अपने लिए कहते हैं मैं जो हूँ जैसा हूँ वह तो समझाता हूँ। परन्तु आत्मा क्या है उनको भी जानना है। एक बार बुद्धि में आ जावे इतनी छोटी सी चीज़ है। बाप से योग लगाना है। यह तो कोई बड़ी बात नहीं दिखती है। इसमें इतना टाईम लगने की भी दरकार नहीं है। गाया जाता है सेकण्ड में जीवनमुक्ति। फट ऊपर जायें। विचार की बात है ना। विचार सागर मंथन करते २, इस महीनता में जाते २ आत्मा प्योर हो जायेगी। और फिर इस शरीर को छोड़ देंगे। तुम बच्चों को घड़ी २ भूल क्यों जाता है। बाबा समझाते तो बहुत ठीक है। फिर भी भूल जाते हैं। तो फट भी ऊपर नहीं सकते। कितना माथा मारना पड़ता है। २। जन्मों की राजाई के लिए क्यों नहीं माथा मारना चाहिए। कितनी गुह्यता में, महीनता में जाना चाहिए। एक चुपके से याद करना है। आवाज़ वाणी से परे जाना है। भल हाँ दाँ तो सब करते हैं परन्तु यह तो बहुत २ महीन बातें हैं। बाप कहते हैं आज तुमको बहुत गुह्यतम बातें सुनाता हूँ। यह भी समझाते हैं बच्चों को याद में रहना ही बड़ी मुश्किलात होती है। घड़ी २ भूल जाते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार यह अवस्था भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आनी ज़रूर है। इसको कहा जाता है अति सहज ते सहज और अति गुह्य ते गुह्य महीन। परन्तु तुम भूल जाते हो। अभी कर्मातीत अवस्था हो जाये फिर तो यह शरीर रह न सके। बाप कितना गुह्यता में ले जाते हैं। मेहनत चाहिए ना। फट उतरना, योग बल में रहना बड़ी मेहनत है। बाप समझाते हैं बहुत एकान्त में बैठ विचार सागर मंथन कर इतना डीप में जाये तब कुछ पता लग सके। कितनी छोटी चीज़ है वह भी बिल्कुल शान्त है। इन आँखों से देखी भी नहीं जाती। अपने को आत्मा समझ और बाप की याद में रहना है। बिन्दी रूप बहुत महीन होने कारण वह लोग फिर कह देते हैं नाम-रूप से न्यारा है। क्या वर्णन करें। है कितना महीन। इतना महीनता में तुम बच्चों को जाना है। इसमें बहुत २ अन्तर्मुख होना होगा। बाप सम्मुख बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे जब योग बल से प्योर बन जाते हैं जिसको याद की यात्रा कहा जाता है तब फिर वह आवाज में आना पसंद नहीं करेंगे। क्योंकि आत्मा आवाज़ से परे है ना। ८४ जन्म इतनी छोटी सी आत्मा लेती आई है। नीचे उतरते २ मैल चढ़ता आया है। इसलिए इनको चढ़ती कला और उतरती कला कहा जाता है। ५००० वर्ष लगते हैं इम्प्योर बनने में। और प्योर बनने में लगता है सेकण्ड। यह भी पूरा समझ में आता है जब अन्त होता है। आखरीन अवस्था ठहर जाते हैं तो फिर नीचे उतरना भी अच्छा नहीं लगेगा। गुड मॉर्निंग करने से भी नीचे उतरना पड़ता है फिर उन पोजीशन को पकड़ना होता है। बड़ी मेहनत लगती है। बाप को तो मेहनत नहीं करनी पड़ती। बच्चों को मेहनत लगती है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाबा तो अनुभवी है। बहुत छोटा २ हीरा आप भी तो देखते हो ना। जवाहरी को काम होता है सब से बड़ा। यह भी जवाहर है। जवाहरी ही समझ सके। जवाहर बहुत पतले पत्थर होते हैं। बहुत छोटे २ होते हैं। इन जवाहरात का भी व्यापार किया है। इस ज्ञान रत्नों को भी जवाहर कहते ना। यह कितनी महीन है। जिसको समझाने में भी कितनी मेहनत लगती है। बाप तो खुद है जो जैसा है वैसा बैठ कर समझायेंगे ना। बच्चों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है ना। इस विचार सागर मंथन में बैठना पड़ता है जो है जैसा है ऐसे

उनको समझना है। फिर उनको समझने बाद योग बल में बैठे तब शरीर छोड़ सो आत्मा उड़ती है। ऐसी अवस्था में बच्चों को जाना है। कितनी गुह्य ते गुह्य बातें बच्चों को समझाई जाती हैं। देखते हैं समय नजदीक आता है। अब तो बाकी है थोड़ा। वहाँ से भी फेर जाना है। अभी ही पुरुषार्थ करना है। पिछाड़ी में पुरुषार्थ करने का टाइम नहीं मिलता। बहुत हाय हाय मच जाती है। कोई तो ठहर भी न सके। उन्हों की बुद्धि में तो सम्बन्धी आदि ही फिरते रहते हैं। इतनी छोटी सी आत्मा प्योर बन जाती है, कर्मातीत अवस्था हो जाती है तो लाईट का ताज मिल जाता है। इतनी छोटी सी आत्मा को, शरीर के लिए नहीं कहेंगे। छोटी सी आत्मा ही प्योर बनती है। शरीर तो इस समय कोई का प्योर हो न सके। आत्मा प्योर बनती है तो आत्मा को ही लाईट मिलती है। कितनी छोटी सी आत्मा, प्योर होने से कैसे लाईट आ जाती है, क्या होता है, इन बातों पर विचार करने से ही पार पाना जाना पड़ता है। कितना कितना बैठ समझाते। प्योर, डबल सिरताज आत्मा ही बनती है। अब आत्मा को लाईट तो दे न सके। कोई की ताकत नहीं। कितनी छोटी आत्मा प्योर हो पास, प्योर होते हैं, ~~प्रारब~~ प्रारब्ध आत्मा को ही मिलती है। अभी तुम सम्मुख सुनते हो। मधुबन की * ही महिमा है। बाप कपार बैठ बच्चों को समझाते हैं। कितनी छोटी आत्मा, कैसे प्योर होती है। फिर उन पर लाईट चढ़ती है। ऐसे ऐसे विचार सागर मंथन करना है। मेहनत करनी है। नहीं तो इतना ऊँच पद थोड़े ही पा सकेंगे। बाप सब बातें समझाते हैं। विचार की बात है ना। लाईट किसके ऊपर है। शरीर के ऊपर शो करते हैं। आत्मा का शो तो देखने में भी न आये। विचार करो बाबा यथार्थ बोलते हैं या नहीं। इतनी छोटी आत्मा इन पर प्योरिटी का ताज कैसे आता है, ताज तो जरूर शरीर पर दिखाना पड़े। मनुष्य पवित्र रहने पर भी कितना हंगामा करते हैं। बेहद का बाप का नहीं मानते बाकी कौन रहा। हद के बाप की मत पर चलते चलते तो पट आय पड़े हैं। बेहद के बाप की श्री मत पर न चलेंगे तो श्रेष्ठ कैसे बनेंगे। आत्मा प्योर कैसे बनेगी। यह तो बहुत बहुत महीनता में जाना पड़ता है। इसमें चाहिए अन्तर्मुखता एकान्त में बैठ विचार सागर मंथन करें। तुम जानते हो यह हमारा अंतिम जन्म है। ~~इसमें~~ इसमें तो पुरुषार्थ करना पड़े। पर को रोटी टुकड़ा मिला खलास। इस अवस्था में खाना भी अच्छा नहीं लगता। याद में ही खुश हो जाते। आत्मा प्योर बनने से ही देवता बनती है। विश्व का मालिक बनते हैं। तो इसमें बड़ी मेहनत करनी पड़े। अपने को आत्मा समझ बैठ जाओ। बाबा कहाँ तक समझायेंगे। यहाँ बैठे बैठे भी ख्यालात और तरफ चली जावेगी तो उबासी देने लग पड़ेंगे थक कर। इसमें बहुत डीप जाना पड़े। इतनी तुम बच्चों को मेहनत करनी है, वह भी बताये देते हैं अभी टाइम पड़ा है। राजाई ही नहीं स्थापन हुई है। पुरुषार्थ करते रहो। अपने को आत्मा बाप को याद करते रहो तब कहीं यथार्थ रीति याद में रहते हैं। बहुत बहुत महीनता है। वह अवस्था जब आत्मा स्थाई हो जाये तो यह शरीर ही छूट जाये। बाबा एम आब्जेक्ट तो बताते ही हैं। पर बनना है, इसमें बड़ी मेहनत है। समझ में आता है लाईट आत्मा को मिलती है न कि शरीर को। तो ऐसे ऐसे विचार सागर मंथन करना है। पास विद आनर हो जाये ऐसी मेहनत करनी है। याद में बैठने से फिर टिक टिक भी अच्छा नहीं लगता। इसमें आवाज तो बिल्कुल नहीं चाहिए। आवाज से भी परे चले जायें वह फिर ध्यान अवस्था हो ~~जाती~~ जाती है। बाप कहते हैं बहुत क्या बतावें। मनमनाभव हो जाओ। एकान्त में चले जाओ। बुद्धि में यही विचार सागर मंथन करता रहे। अपने को आत्मा तुम पैदल करेंगे। परन्तु यह अवस्था आगे में टाइम भी लेगा। जल्दी नहीं होगी। आत्मा को ही राजाई प्राप्त करनी है। डबल सिरताज बनना है शरीर धारण कर। ऐसे नहीं लक्ष्मी नारायण के ऊपर कोई लाईट का ताज रखा है। यह सब बुद्धि से समझने की बातें हैं। अच्छा, मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों को यादप्यार गुड मोर्निंग। अच्छा बच्चों को नमस्ते। ॐ